

सोनांचल के आंचलिक साहित्य की स्वाभाविकता एवं उपादेयता

डॉ. राजेश कुमार वर्मा

सहायक प्राध्यापक, टाटा कॉलेज, जमोड़ी खुर्द, सीधी, मध्यप्रदेश

सारांश

सोनांचल पूर्वी मध्य प्रदेश का एक महत्वपूर्ण भौगोलिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्र है। सोन नदी के तटवर्ती पर्वतीय, वन एवं पठारी भू-भागों में विस्तृत यह क्षेत्र अपनी विशिष्ट लोकसंस्कृति, परंपराओं, रीति-रिवाजों, लोकविश्वासों, लोकगीतों, लोककथाओं तथा ऐतिहासिक एवं पौराणिक गौरवगाथाओं के लिए जाना जाता है। यहाँ का जनजीवन प्रकृति से अत्यंत निकट रूप से जुड़ा हुआ है। कृषि, वन, नदी, पर्वत तथा स्थानीय सामाजिक संरचना ने यहाँ के जीवन को विशिष्ट स्वरूप प्रदान किया है। इन जीवनानुभूतियों का प्रभाव सोनांचल के साहित्य में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। हिंदी साहित्य में आंचलिकता की परंपरा नई नहीं है। भारतीय साहित्य में लोकजीवन और क्षेत्रीय संस्कृति का चित्रण प्राचीन काल से मिलता रहा है। आधुनिक हिंदी साहित्य में प्रेमचंद, निराला और विशेष रूप से फणीश्वरनाथ रेणु आदि रचनाकारों ने आंचलिक जीवन को साहित्य की मुख्यधारा से जोड़ा। इसके परिणामस्वरूप विभिन्न क्षेत्रों की भाषा, संस्कृति, लोकपरंपरा और जनजीवन साहित्य के विषय बने। सोनांचल भी इस दृष्टि से अत्यंत समृद्ध क्षेत्र है, किंतु इसके आंचलिक साहित्य का समग्र और विश्लेषणात्मक अध्ययन अपेक्षाकृत कम हुआ है। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य सोनांचल के आंचलिक साहित्य की स्वाभाविकता, उसकी विशिष्टता तथा उसकी साहित्यिक एवं सामाजिक उपादेयता को रेखांकित करना है। सोनांचल के साहित्य में लोकसंस्कृति, लोकभाषा, बघेली बोली, लोकगीत, लोककथाएँ, रीति-रिवाज, पर्व-त्योहार, संस्कार, सामाजिक संबंध, आर्थिक संघर्ष, धार्मिक विश्वास तथा प्राकृतिक परिवेश का स्वाभाविक चित्रण मिलता है। इस कारण यह साहित्य केवल साहित्यिक अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि सोनांचल के जनजीवन और सांस्कृतिक स्मृति का जीवंत दस्तावेज भी है।

मुख्य शब्द: सोनांचल, आंचलिक साहित्य, आंचलिकता, लोकसाहित्य, लोकजीवन, लोकसंस्कृति, बघेली, लोकगीत, परंपरा, जनचेतना।

1. प्रस्तावना

साहित्य मनुष्य के जीवन और समाज की रचनात्मक अभिव्यक्ति है। जीवन की परिस्थितियाँ, सामाजिक परिवर्तन, आर्थिक संघर्ष, राजनीतिक घटनाएँ और सांस्कृतिक मूल्य साहित्य को प्रभावित करते हैं। साहित्यकार अपने समय और परिवेश से निरंतर प्रभावित होता है तथा अपनी अनुभूतियों को रचना के माध्यम से अभिव्यक्त करता है। इसलिए साहित्य और समाज का संबंध अत्यंत घनिष्ठ है। किसी भी समाज को समझने के लिए उसके साहित्य का अध्ययन आवश्यक है। साहित्य में समाज की मानसिकता, जीवन-पद्धति, परंपराएँ, मान्यताएँ, संघर्ष और आकांक्षाएँ अभिव्यक्त होती हैं। जब साहित्यकार किसी विशेष भौगोलिक क्षेत्र को अपनी रचना का आधार बनाकर वहाँ के जीवन, संस्कृति, प्रकृति और भाषा का चित्रण करता है, तब उसमें आंचलिकता का स्वरूप दिखाई देता है।

सोनांचल की भौगोलिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियाँ उसे आंचलिक साहित्य की दृष्टि से विशिष्ट बनाती हैं। सोन नदी, पर्वतीय क्षेत्र, वन, पठार और ग्रामीण परिवेश यहाँ के जनजीवन को प्रभावित करते हैं। स्थानीय समाज में अनेक लोकपरंपराएँ आज भी जीवित हैं। लोकगीत, लोककथाएँ, संस्कारगीत, पर्व-त्योहार, कृषि संबंधी परंपराएँ, कहावतें

और मुहावरे यहाँ की सांस्कृतिक पहचान हैं। इन्हीं विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए सोनांचल के आंचलिक साहित्य का अध्ययन आवश्यक प्रतीत होता है। यहाँ के साहित्यकारों ने अपने क्षेत्र के जनजीवन को विभिन्न साहित्यिक विधाओं में अभिव्यक्त किया है। कविता, कहानी, निबंध, उपन्यास, लोकगीत, नाटक तथा लोकसाहित्य में सोनांचल की अपनी विशिष्ट पहचान दिखाई देती है।

2. आंचलिकता का अर्थ

‘अंचल’ शब्द का सामान्य अर्थ किसी विशेष भू-भाग, प्रदेश, क्षेत्र या जनपद से है। संस्कृत में ‘अंचल’ शब्द का प्रयोग वस्त्र के छोर या किनारे के अर्थ में भी हुआ है। हिंदी में इसका अर्थ किसी क्षेत्र के किनारे, भाग अथवा विशिष्ट भू-खंड के रूप में विकसित हुआ। साहित्य के संदर्भ में जब किसी विशेष क्षेत्र को रचना का केंद्र बनाया जाता है और उसके जीवन की विशिष्टताओं को रचना में स्थान मिलता है, तब ‘आंचलिकता’ की अवधारणा विकसित होती है।

आंचलिकता का अर्थ केवल किसी स्थान या गाँव का नाम लेना नहीं है। किसी रचना में आंचलिकता तभी प्रभावी होती है, जब उसमें उस क्षेत्र की जीवन-पद्धति, भाषा, संस्कृति, प्रकृति, सामाजिक संरचना, लोकविश्वास, रीति-रिवाज और मानवीय संबंधों का स्वाभाविक चित्रण हो। आंचलिक साहित्य में स्थानीयता के साथ व्यापक मानवीय संवेदना भी होती है। स्थानीय जीवन की किसी विशेष घटना या समस्या को साहित्य में इस प्रकार प्रस्तुत किया जाता है कि वह व्यापक मानवीय अनुभव का हिस्सा बन जाती है। यही आंचलिक साहित्य की सबसे बड़ी शक्ति है।

3. आंचलिक साहित्य की प्रमुख विशेषताएँ

आंचलिक साहित्य की प्रमुख विशेषताओं को निम्नलिखित रूप में देखा जा सकता है—

- किसी विशेष भौगोलिक क्षेत्र को केंद्र में रखना।
- स्थानीय भाषा अथवा बोली का स्वाभाविक प्रयोग।
- लोकसंस्कृति एवं लोकपरंपराओं का चित्रण।
- स्थानीय रीति-रिवाजों और संस्कारों की अभिव्यक्ति।
- क्षेत्र विशेष के प्राकृतिक परिवेश का चित्रण।
- स्थानीय सामाजिक एवं आर्थिक समस्याओं को सामने लाना।
- लोकगीत, लोककथा, कहावत और मुहावरों का प्रयोग।
- स्थानीय जनमानस और उसकी मानसिकता का चित्रण।
- परंपरा और आधुनिकता के संघर्ष को प्रस्तुत करना।
- क्षेत्रीय जीवन के माध्यम से सार्वभौमिक मानवीय संवेदनाओं को व्यक्त करना।

इन विशेषताओं के आधार पर सोनांचल के साहित्य का अध्ययन करने पर उसमें आंचलिकता के अनेक रूप दिखाई देते हैं।

4. सोनांचल का भौगोलिक एवं सांस्कृतिक परिवेश

सोनांचल पूर्वी मध्य प्रदेश का एक विशिष्ट क्षेत्र है। सोन नदी और उससे जुड़े भौगोलिक परिवेश ने यहाँ के जीवन को विशेष रूप से प्रभावित किया है। पर्वत, वन, नदी और पठारी भू-भाग यहाँ की प्राकृतिक संरचना के प्रमुख अंग हैं। प्राकृतिक परिवेश का प्रभाव किसी भी क्षेत्र की संस्कृति पर पड़ता है। सोनांचल में भी प्रकृति और मनुष्य का संबंध अत्यंत निकट है। कृषि, पशुपालन और वन-संसाधनों पर आधारित जीवन ने यहाँ की सामाजिक संरचना को प्रभावित किया है। ग्रामीण समाज की दिनचर्या ऋतुचक्र और कृषि-व्यवस्था से जुड़ी हुई है। यहाँ के पर्व-त्योहार, विवाह संस्कार, जन्मोत्सव, धार्मिक अनुष्ठान और सामाजिक आयोजन लोकजीवन की सामूहिक चेतना को अभिव्यक्त करते हैं। इन अवसरों पर गाए जाने वाले लोकगीतों में प्रेम, विरह, उत्सव, श्रम, प्रकृति और सामाजिक संबंधों की अभिव्यक्ति मिलती है।

5. सोनांचल की लोकसंस्कृति और साहित्य

लोकसंस्कृति किसी भी अंचल की पहचान होती है। सोनांचल की लोकसंस्कृति में लोकगीत, लोककथा, लोकनृत्य, लोकविश्वास, कहावतें, लोकोक्तियाँ, संस्कार और त्योहार प्रमुख हैं। लोकसंस्कृति का साहित्य से गहरा संबंध है। सोनांचल के साहित्यकारों ने लोकसंस्कृति को केवल सजावटी तत्त्व के रूप में ग्रहण नहीं किया, बल्कि उसे अपने साहित्य के मूल जीवन-संदर्भ के रूप में प्रस्तुत किया। लोकगीतों में ग्रामीण जीवन की संवेदनाएँ हैं तो लोककथाओं में लोकमानस की कल्पना और अनुभव दिखाई देते हैं। कहावतों और मुहावरों में पीढ़ियों से संचित जीवनानुभव सुरक्षित हैं। इस प्रकार सोनांचल का साहित्य लोकसंस्कृति के संरक्षण का कार्य भी करता है। तेजी से बदलते आधुनिक परिवेश में, जब अनेक लोकपरंपराएँ समाप्त होने के कगार पर हैं, तब साहित्य उन्हें सुरक्षित रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

6. सोनांचल के साहित्य में भाषा और बघेली

आंचलिक साहित्य की सबसे महत्वपूर्ण पहचान उसकी भाषा होती है। भाषा केवल संप्रेषण का माध्यम नहीं, बल्कि संस्कृति की संवाहक भी है। किसी क्षेत्र की बोली में वहाँ के जीवन की मानसिकता, सामाजिक संबंध और सांस्कृतिक स्मृति सुरक्षित रहती है। सोनांचल के साहित्य में बघेली भाषा और उसके स्थानीय रूपों का महत्वपूर्ण स्थान है। बघेली के शब्द, मुहावरे, लोकोक्तियाँ और वाक्य-विन्यास साहित्य को स्थानीय रंग प्रदान करते हैं। जब साहित्यकार पात्रों को उनकी स्वाभाविक भाषा में बोलने देता है, तब रचना अधिक विश्वसनीय और प्रभावशाली बन जाती है। भाषावैज्ञानिक दृष्टि से भी सोनांचल की भाषिक सामग्री अत्यंत उपयोगी है। स्थानीय शब्दावली, उच्चारण, ध्वनि-विन्यास और व्याकरणिक संरचनाओं के अध्ययन से भाषा के क्षेत्रीय विकास को समझने में सहायता मिलती है।

7. सोनांचल के आंचलिक साहित्य की स्वाभाविकता

सोनांचल के आंचलिक साहित्य की सबसे प्रमुख विशेषता उसकी स्वाभाविकता है। यहाँ का साहित्य किसी कृत्रिम वातावरण में निर्मित नहीं हुआ, बल्कि स्थानीय जीवन के प्रत्यक्ष अनुभव से विकसित हुआ है। सोनांचल के रचनाकार अपने आसपास के समाज, गाँव, खेत, नदी, वन, पर्वत, परिवार और सामाजिक संबंधों से सीधे जुड़े रहे हैं। इसलिए उनकी रचनाओं में स्थानीय जीवन का चित्रण सहज रूप से मिलता है। आंचलिकता की स्वाभाविकता तब दिखाई देती है, जब साहित्यकार स्थानीय जीवन को उसकी अच्छाइयों और कमियों दोनों के साथ प्रस्तुत करता है। सोनांचल के साहित्य में लोकजीवन के सौंदर्य के साथ गरीबी, अशिक्षा, सामाजिक रूढ़ियाँ, अंधविश्वास और आर्थिक समस्याएँ भी

दिखाई देती हैं। इस प्रकार यहाँ का साहित्य केवल अतीत का महिमामंडन नहीं करता, बल्कि वर्तमान जीवन की वास्तविकताओं से भी संवाद करता है।

8. सोनांचल के आंचलिक साहित्य की उपादेयता

सोनांचल के आंचलिक साहित्य की उपादेयता अनेक स्तरों पर दिखाई देती है। यह साहित्य सोनांचल की लोकसंस्कृति, परंपराओं और सांस्कृतिक मूल्यों को सुरक्षित रखता है। लोकगीत, लोककथाएँ और लोकपरंपराएँ आने वाली पीढ़ियों तक पहुँचती हैं। आंचलिक साहित्य समाज की वास्तविक समस्याओं को सामने लाता है। गरीबी, अशिक्षा, बेरोजगारी, सामाजिक विषमता, स्त्री की स्थिति और ग्रामीण जीवन की कठिनाइयाँ साहित्य के माध्यम से अभिव्यक्त होती हैं। बघेली तथा अन्य स्थानीय भाषिक रूपों के अध्ययन में सोनांचल का साहित्य अत्यंत उपयोगी है। स्थानीय शब्दों और मुहावरों के संरक्षण में साहित्य की महत्वपूर्ण भूमिका है। सोनांचल के साहित्य का समग्र अध्ययन शोधार्थियों के लिए नई संभावनाएँ प्रस्तुत करता है। अब तक हुए अध्ययनों में प्रायः किसी विशेष साहित्यकार या विधा पर अधिक ध्यान दिया गया है। समग्र आंचलिक दृष्टि से अध्ययन अपेक्षाकृत नवीन दिशा प्रस्तुत कर सकता है। साहित्य किसी क्षेत्र के सामाजिक इतिहास को समझने का महत्वपूर्ण साधन है। सोनांचल की रचनाओं में विभिन्न कालखंडों की सामाजिक परिस्थितियों और परिवर्तनों की झलक मिलती है।

9. सोनांचल के साहित्य में सामाजिक यथार्थ

सोनांचल का साहित्य बदलते हुए ग्रामीण समाज का दस्तावेज प्रस्तुत करता है। पारंपरिक ग्रामीण व्यवस्था में समय के साथ अनेक परिवर्तन आए हैं। शिक्षा, संचार, सड़क, तकनीक और नगरीकरण ने यहाँ की जीवन-पद्धति को प्रभावित किया है। इन परिवर्तनों के कारण ग्रामीण समाज की सोच, सामाजिक संबंधों और जीवन-मूल्यों में भी परिवर्तन दिखाई देते हैं। पुरानी मान्यताओं और आधुनिक विचारों के बीच संघर्ष भी साहित्य में दिखाई देता है। स्त्री की सामाजिक स्थिति, शिक्षा, परिवार, विवाह, रोजगार और सामाजिक अधिकारों को लेकर दृष्टिकोण बदले हैं। साहित्य इन परिवर्तनों को संवेदनशीलता के साथ अभिव्यक्त करता है। इसी के साथ जातीय संबंधों, पारिवारिक संरचना और नई पीढ़ी की आकांक्षाओं में आए बदलाव भी आंचलिक साहित्य की विषयवस्तु बने हैं। इसी प्रकार आर्थिक जीवन में भी परिवर्तन हुआ है। कृषि, मजदूरी, रोजगार और पलायन जैसी समस्याएँ ग्रामीण समाज को प्रभावित करती हैं। आर्थिक कठिनाइयों के कारण ग्रामीण युवा नगरों की ओर जाते हैं, जिससे परिवार और सामाजिक जीवन में भी परिवर्तन आता है। इन समस्याओं की अभिव्यक्ति आंचलिक साहित्य को समकालीन और जीवनोपयोगी बनाती है।

10. सोनांचल के प्रमुख साहित्यकार और आंचलिक चेतना

सोनांचल की साहित्यिक परंपरा में अनेक रचनाकारों का योगदान रहा है। कविता के क्षेत्र में बैजनाथ बैजू, सैफुद्दीन सैफ, अमोल बटरोही आदि रचनाकारों ने स्थानीय जीवन और सांस्कृतिक परिवेश को अभिव्यक्ति दी। बाद की पीढ़ी में कालिका त्रिपाठी, शंभू काका, रामरखन शर्मा 'निर्मल', सुदामा शरण, सुदामा मिश्र, बाबूलाल दाहिया तथा गिरिजाशंकर 'गिरीश' आदि का योगदान उल्लेखनीय है। सीधी क्षेत्र से संबंधित रचनाकारों में हरिनारायण सिंह 'हरीश', श्रीनिवास शुक्ल 'सरस', मैथिलीशरण शुक्ल 'मैथिली', शिवशंकर मिश्र 'सरस' तथा आर. जी. पाण्डेय 'विकल' आदि के साहित्य में बघेली और स्थानीय जीवन के तत्त्वों का उल्लेख मिलता है। इन रचनाकारों ने लोकभाषा, लोकसंस्कृति, परंपराओं और जनजीवन को साहित्यिक अभिव्यक्ति देकर सोनांचल की क्षेत्रीय पहचान को सुदृढ़ किया है। इन

रचनाकारों के साहित्य का अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि सोनांचल की आंचलिक चेतना किसी एक साहित्यिक विधा तक सीमित नहीं है। कविता, कहानी, निबंध, लोकगीत और अन्य विधाओं में इसके विविध रूप दिखाई देते हैं।

11. सोनांचल के आंचलिक साहित्य के विकास में योगदान

हिंदी साहित्य में आंचलिक प्रवृत्ति के विकास में बीसवीं शताब्दी का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। प्रेमचंद के ग्रामीण जीवन संबंधी साहित्य से लेकर फणीश्वरनाथ रेणु तक आंचलिक जीवन को साहित्य में निरंतर महत्व प्राप्त हुआ। रेणु के साहित्य ने आंचलिकता को व्यापक साहित्यिक पहचान प्रदान की और विभिन्न क्षेत्रों के स्थानीय जीवन को साहित्य का महत्वपूर्ण विषय बनाने की प्रेरणा दी। इसके बाद देश के विभिन्न क्षेत्रों के साहित्यकारों ने अपनी स्थानीय संस्कृति और जीवन को साहित्य में स्थान दिया। सोनांचल में भी इसी व्यापक साहित्यिक प्रवृत्ति का विकास हुआ। बघेली भाषा और लोकसंस्कृति ने स्थानीय साहित्य को अलग पहचान प्रदान की। यहाँ के रचनाकारों ने ग्रामीण समाज, प्रकृति, लोकपरंपरा और सामाजिक संघर्षों को साहित्य की विषयवस्तु बनाया। सोनांचल के साहित्य ने स्थानीय भाषा, लोकगीत, लोकविश्वास और परंपराओं को सुरक्षित रखने में भी योगदान दिया है। इस प्रकार यह साहित्य क्षेत्रीय संस्कृति के संरक्षण के साथ हिंदी साहित्य की विविधता को भी समृद्ध करता है।

12. शोध की उपादेयता

सोनांचल के आंचलिक साहित्य पर शोध की आवश्यकता इसलिए भी है कि इस क्षेत्र की साहित्यिक सामग्री व्यापक होने के बावजूद उसका समग्र मूल्यांकन सीमित है। अलग-अलग रचनाकारों पर कार्य हुए हैं, लेकिन उनके साहित्य को एक व्यापक आंचलिक संदर्भ में देखने की आवश्यकता है। प्रस्तुत अध्ययन में कविता, कहानी, निबंध, लोकगीत और अन्य साहित्यिक विधाओं को एक साथ देखने का प्रयास किया जा सकता है। इससे सोनांचल की साहित्यिक पहचान का समग्र स्वरूप सामने आएगा। साथ ही बघेली भाषा, लोकसंस्कृति, लोकपरंपराओं तथा सामाजिक जीवन के अध्ययन के लिए भी उपयोगी सामग्री प्राप्त होगी। इस शोध से भविष्य के शोधार्थियों को नई सामग्री प्राप्त होगी। विशेष रूप से बघेली भाषा, लोकसाहित्य, लोकसंस्कृति और क्षेत्रीय साहित्य के अध्ययन के लिए यह उपयोगी आधार बन सकता है। साथ ही अप्रकाशित अथवा अल्पज्ञात रचनाओं और साहित्यकारों को सामने लाने की दिशा में भी यह शोध महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

13. निष्कर्ष

सोनांचल का आंचलिक साहित्य अपनी विषयवस्तु, भाषा, शैली और सांस्कृतिक संदर्भों की दृष्टि से अत्यंत समृद्ध है। इसकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह स्थानीय जीवन को उसकी स्वाभाविकता के साथ प्रस्तुत करता है। यहाँ के साहित्य में प्रकृति, लोकसंस्कृति, लोकभाषा, सामाजिक संबंध, आर्थिक संघर्ष, धार्मिक विश्वास और जनचेतना का समन्वित स्वरूप दिखाई देता है। सोनांचल की आंचलिकता किसी कृत्रिम साहित्यिक प्रयास का परिणाम नहीं है। यह वहाँ के रचनाकारों के जीवनानुभव और अपने परिवेश के प्रति गहरे लगाव से उत्पन्न हुई है। स्थानीय मिट्टी, नदी, पर्वत, वन, खेत, लोकगीत और लोकभाषा उनके साहित्य में जीवंत होकर उपस्थित होते हैं। आंचलिक साहित्य की उपादेयता केवल साहित्यिक नहीं है। यह संस्कृति के संरक्षण, लोकभाषा के संवर्धन, सामाजिक समस्याओं की पहचान, ऐतिहासिक चेतना के निर्माण तथा भविष्य के शोध के लिए महत्वपूर्ण सामग्री प्रदान करता है।

सोनांचल के आंचलिक साहित्य के समग्र अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि यह साहित्य हिंदी की मुख्यधारा से अलग कोई सीमित साहित्य नहीं, बल्कि हिंदी साहित्य की विविधता और समृद्धि का अभिन्न अंग है। इसकी स्थानीयता ही

इसकी व्यापकता का आधार है। स्थानीय जीवन को ईमानदारी से प्रस्तुत करने के कारण इसकी संवेदना सार्वभौमिक मानवीय अनुभवों तक पहुँचती है। अतः सोनांचल के आंचलिक साहित्य का अध्ययन साहित्यिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और भाषावैज्ञानिक सभी दृष्टियों से अत्यंत उपयोगी है। इस क्षेत्र के अप्रकाशित एवं अल्पज्ञात साहित्यकारों और रचनाओं को खोजकर उनका मूल्यांकन करना भविष्य के शोध की महत्वपूर्ण दिशा हो सकती है। इससे सोनांचल की साहित्यिक विरासत को राष्ट्रीय हिंदी साहित्य के व्यापक परिप्रेक्ष्य में उचित स्थान प्राप्त होगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. सिंह, के. एस., 2005, उत्तर की जनजातियाँ, प्रकाशन गांधी नगर, दिल्ली।
2. तिवारी, डॉ. अर्जुन, 2014, भोजपुरी साहित्य का इतिहास, विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक, वाराणसी।
3. शुक्ल, भगवती प्रसाद, 2015, बघेली भाषा और साहित्य, सम्यक साहित्य संस्थान, भारत भवन।
4. तिवारी, रामप्रसाद, 2010, हम कहे जाइथे, सम्यक साहित्य संस्थान, भारत भवन।
5. दास, रामकृष्ण, 2006, लोकगीतों की सामाजिक व्याख्या, साहित्य केंद्र प्रकाशन, दिल्ली।
6. त्रिपाठी, डॉ. अरविंद, 2013, सोनांचल भाषा एवं साहित्य, वाराणसी पब्लिकेशन्स, वाराणसी।
7. सिंह, जीवन, 2003, बघेलखंड के देशी राज्यों का भूगोल, सम्यक साहित्य प्रकाशन, भारत भवन।
8. यादव, हिजराम एवं कुमार, डॉ. विजय, 1997, लोक साहित्य एवं भोजपुरी लोक साहित्य, विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक, वाराणसी।
9. उपाध्याय, डॉ. कृष्णदेव, 1993, लोक साहित्य की भूमिका, साहित्य केंद्र प्रकाशन, नई दिल्ली।
10. चंद्र, डॉ. संसार, 2013, सोनांचल लोक साहित्य का महत्व, विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक, वाराणसी।
11. उपाध्याय, डॉ. कृष्णदेव एवं केशरी, अर्जुनदास, 1983, भोजपुरी लोकगीत।